अक्रम यूथ

मई 2018 | हिन्दी
दादा भगवान परिवार
₹20

4 मेक-अप यानी क्या?

6 क्या मैं दूसरों की अच्छाई का फायदा उठाता हूँ?

8 ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

9 युवा कैम्प २०१८

10 मेक-अप कहाँ-कहाँ कर सकते हैं?

12 मेक-अप का परिणाम

14 **Q & A**

15 प्रयोग

16 **Akram Pedia**

18 अनुभव

20 वर्ड सर्च

22 पज़ल

23 पूज्यश्री के जन्मदिन का उत्सव मनाया गया

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : 6, अंक : 1
अखंड क्रमांक : 61
मई 2018

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल 24 पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : 125 रुपए
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : 500 रुपए
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 40 पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के
नाम पर भेजें।

संपादकीय

" मेक-अप" का अर्थ "किसी भी बदसूरत व्यक्ति या चीज़ को सुंदर दिखाने का प्रयत्न," इतना ही करते हैं।

लेकिन, वास्तव में मेक-अप को हम कपट भी कह सकते हैं, जो हमारे जीवन में अन्य कई भूमिकाएँ निभाता है।

जैसेकि, हो चुकी गलती को, किसी को पता नहीं चले इस तरह से छिपाने का प्रयत्न।
स्वार्थ की खातिर खुद के अलावा अन्य किसी के हिताहित का विचार तक न करने की वृत्ति।
खुद के विचार, मनोवृत्ति का असर चेहरे या वर्तन में दिखाई न दे, ऐसी कोशिश वगैरह...
सदियों से मानवजाति अनेक मोहरे (नकली चेहरे) पहनकर एक-दूसरे को ठगने में सफल रही हैं। कभी जान-बूझकर, तो कभी अन्जाने में, कभी दिखावा बदलकर, तो कभी वर्तन बदलकर। इस अंक में मेक-अप यानी कपट को हम दादाश्री के दृष्टिकोण से समझेंगे। तो चलो, आनंद लें इस अंक के अदभुत सफर का।

- डिम्पल मेहता

मेक-अप

"ऑनलाइन शॉपिंग करनी ही नहीं चाहिए... वे लोग दिखाते कुछ हैं और देते कुछ और हैं... हम परखकर लेंगे तो ठगे नहीं जाएँगे... वगैरह," ऐसी बहुत सी बातें हमारे सुनने में आती हैं और कई बार सच भी साबित होती हैं। लेकिन देखकर और जाँच करके ली हुई चीज़ में क्या हम कभी ठगे नहीं जाते? मॉल से लिए हुए कपड़े जब घर आकर पहनें तब, "यह मैंने क्यों ले लिया?" हमारे मन में क्या कभी ऐसा विचार आता है? जो चीज़ मॉल में या शो-रूम में बहुत आकर्षक लगती है, वह घर में वैसी नहीं लगती... ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि, मॉल और शो-रूम में ऐसी लाइटिंग इफेक्ट रहती है जिससे चीज़ या कपड़े आकर्षक लगते हैं। ऐसे आईने लगाए रहते हैं कि जिसमें हम सुडोल और सुंदर दिखाई दें ताकि पहनी हुई चीज़ हम पर अच्छी लगे और उसे खरीदने को हमारा मन करे।

ऐसा बहुत कुछ हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं। चीज़ों को बेचने के लिए लोग हर रोज़ नई तरकीब अपनाते हैं। चीज़ की क्वॉलिटी से ज्यादा अच्छा उसका पैकिंग रहता है। परीक्षा में विद्यार्थी एक पंक्ति के बज़ाय पाँच पंक्तियों में (उत्तर का) वर्णन करता है। बेकार चीज़ों को टीपटोप (सजाकर) बनाकर इस प्रकार शो-ऑफ करते हैं कि देखकर ही लोग आकर्षित हो जाएँ। लोगों के मनोरंजन के लिए हीरो-हीरोइन अपने दिखावे के साथ-साथ निजी जीवन को भी मेक-अप करने से नहीं झिझकते।

सिर्फ यही लोग नहीं बल्कि हम भी मेक-अप की दुनिया का एक हिस्सा हैं। मेक-अप यानी सिर्फ चेहरे पर नहीं बल्कि अपने चरित्र, वाणी, वर्तन और यहाँ तक अपने मन को भी इस मेक-अप से दूर नहीं रख पाए हैं।

आज के आधुनिक युग में इन सभी चीज़ों को हम मेक-अप कहते हैं। जबकि ज्ञानियों और संत पुरुषों ने इसे कपट कहा है। कपट अर्थात् और कुछ नहीं बल्कि वस्तु, व्यक्ति, वाणी या विचार को जैसा है वैसा नहीं दिखाना। उस पर किसी भी प्रकार का आवरण लगाकर, जैसा है उससे ज्यादा अच्छा दिखाना।

यानी क्या ?

1. छिपा काम करना, उसे मेक-अप कहते हैं।

मल्लिनाथ भगवान अपने पिछले जन्म में अपने सहाध्यायीओं के साथ नियमित साधना करते थे। उन्हें ऐसा विचार आया कि, मैं ज्यादा साधना करके इनसे आगे निकल सकता हूँ। उन्होंने छिपकर साधना करना शुरू कर दिया। इसी के परिणाम स्वरूप उन्हें स्त्री देह प्राप्त हुआ।

2. मेक-अप यानी जैसा है वैसा नहीं बोलना।

मम्मी : "जय श्री कृष्ण बेटा, क्या कर रहा है?"
नियति : "मैं पढ़ाई कर रहा हूँ, मम्मी। एक घंटे बाद तुझे फोन करूँ?"
मम्मी : "ओ.के, बेटा! "
नियति ने फोन रखकर सुहानी से कहा कि, "सॉरी यार, अब डिस्टर्ब नहीं होगा। मैं फोन ऑफ कर देती हूँ। चल, अब तू मूवी शुरू कर।"

3. कपट में चतुराई है। जिसके साथ कपट करना हो, उसे चतुराई से वश कर लेते हैं।

निधि को शॉपिंग के लिए पैसे चाहिए, इसलिए वह मम्मी का मूड अच्छा होने की राह देख रही है। आज सुबह से ही निधि सारे कामों में मम्मी की मदद कर रही है। मम्मी के साथ बहुत प्रेम वाला वर्तन करके और अच्छी बनकर, बातों-बातों में ही मम्मी से पैसों के लिए पूछ लेती है और मम्मी के साथ ऐसा वर्तन करती है, मानो वह शॉपिंग जाना ही नहीं चाहती, लेकिन अपनी सहेलियों के आग्रह के कारण जा रही है। ऐसा करती है जिससे मम्मी सामने से ही कहे कि, "तू शॉपिंग के लिए जा"।

4. सभी प्रकार के कपट करते हैं, किसी का फायदा उठाने के लिए।

चुनाव के समय गाँव का मुखिया गरीब लोगों को कपड़े और पैसे देता है, पूरे गाँव को खाना खिलाता है। कुछ लोगों की सरकारी कामों में मदद करता है। नई - नई योजनाओं के बारे में चर्चा करता है कि गाँव में सुधार होगा, गरीबों को मदद मिलेगी। ऐसी तरकीबें लगाकर लोगों का विश्वास जीत लेता है ताकि वे उसे ही मतदान करें।

क्या मैं दूसरों की अच्छाई का फायदा उठाता हूँ?

पवन, मिहिर, मानव और आदर्श, चारों दोस्त आज लॉग-ड्राइव पर निकले हैं। मुंबइ पार करके हाइवे पर एक-दूसरे की बातों का मज़ा लेते हुए, खंडाला की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

"एय आदर्श, तू कार कहाँ से लाया यार, बहुत मस्त है और म्यूजिक सिस्टम तो सुपर्ब है।" पवन ने उत्साहित होकर कहा। मंद-मंद मुस्कुराते हुए आदर्श ने गाड़ी की स्पीड (रफ्तार) बढ़ाई। "कंट्रोल यार, यह तो बता कि यह गाड़ी है किसकी? तेरे पापा की तो नहीं है, राइट?" मानव ने जिज्ञासा से पूछा। "आदर्श, किसी की चोरी करके लाया है क्या?" मिहिर ने हँसते-हँसते पूछा। "बॉस, चोरी तो उसे करनी पड़ती है, जिसके पास दिमाग़ न हो। आखिरकार आदर्श ने कहा, "बाय द वे, यह कार किसकी है, पता है?" पवन ने कुतूहलता से पूछा, "किसकी?" बालों में हाथ फिराते हुए आदर्श ने कहा, "प्रोफेसर दत्ता की।" पवन, मिहिर और मानव तीनों आश्चर्यचकित हो गए। शीशे में से आदर्श ने तीनों को देखा और हँसते हुए कहा, "रिलैक्स फ्रेन्ड्स, चोरी करके नहीं लाया। उन्होंने खुद मुझे चलाने के लिए दी है। नथिंग इज इम्पोसिबल फॉर आदर्श।"

मानव ने कहा, "आदर्श, कुछ समझ में नहीं आया।" आदर्श ने आँख मारते हुए कहा, "देखो, प्रोफेसर दत्ता का बेटा मेरा बेस्ट फ्रेन्ड है। पवन ने चीढ़कर कहा, "अच्छा, तो फिर हम तीनों कौन हैं?" आदर्श ने पूछा, "अरे यार, परीक्षा में पास होना है न?" पवन ने ज़ोर से हँसकर कहा, "ओह... मैं समझ गया।"

"तपन और मेरी दोस्ती की वजह से ही हम पिछली परीक्षा में पास हुए हैं, समझा? परीक्षा से दो दिन पहने मैंने जो पेपर्स तुम्हें दिए थे, वे तपन ने ही मुझे दिए थे। आदर्श ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "पिछले साल चौथे सेमेस्टर की परीक्षा में बहुत कम मार्क मिले थे" तब पापा ने बहुत डाँटा था। तब मैंने सोचा था कि कुछ तो करना पड़ेगा। क्योंकि पढ़ाई तो अपने सिलेबस के बाहर की चीज़ है। वेकेशन के दौरान मैंने प्रोफेसर दत्ता और तपन को सिध्धिविनायक मंदिर के बाहर गरीबों को कपड़े और खाना देते हुए देखा। मैंने सुना था कि परीक्षा के सारे पेपर्स प्रोफेसर दत्ता के पास ही रहते हैं और उनका बेटा तपन हमारी उम्र का ही लगा। तपन के बारे में पता लगाया तो जाना कि वह गरीबों की मदद करने वाली दो-तीन संस्थाओं से जुड़ा हुआ है। गरीबों के प्रति उसके दयाभाव का फायदा उठाने का मैंने तय किया। उसे फँसाने के लिए मैंने एक योजना बनाई। तपन जिस दुकान में गया था, उस दुकान के बाहर खड़े रहकर मैं उसके बाहर आने का इंतज़ार करने लगा। जैसे ही बाहर आता दिखाई दिया, तभी मैं फोन पर बात करने का नाटक करने लगा, "मम्मी, मेरी किताबें बहुत मँहगी हैं। नहीं तेरी दवाईयाँ ज्यादा ज़रूरी हैं। नहीं मम्मी, प्लीज।" तभी तपन ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर पूछा कि, "क्या हुआ?" मैंने कहानी बनाई कि, "मेरे पापा खास कुछ कमाते नहीं हैं। मम्मी बीमार रहती हैं, छोटी बहन भी है। मैं पढ़ने में होशियार नहीं हूँ। घर की ऐसी परिस्थिति के कारण पढ़ाई में मन नहीं लगता। मैं अगर परीक्षा में पास नहीं हुआ, तो मुझे नौकरी कौन देगा? और मैं अपने परिवार को कैसे चलाऊँगा?"

तपन मेरी बातों में आ गया। किसी न किसी बहाने से मैं उससे ज्यादा मिलने लगा। धीरे-धीरे मैं उसका दोस्त बन गया और मेरी बातों में उसे और ज्यादा फँसाता गया। पिछली परीक्षा के दो दिन पहले उसने मुझे पेपर्स देते हुए कहा, "दोस्त, ले पेपर्स।" नहीं, नहीं करते हुए मैंने पेपर्स ले लिए। उन पेपर्स से पास भी हो गया और उन्हें बेचकर कमाया भी। लेकिन, तुम तीनों को मुफ्त में दिए हैं। लेकिन हाँ, यह बात हम चारों के बीच ही रहनी चाहिए, समझे? "आदर्श ने सख्ती से कहा।"

हाँ यार तू इसकी चिंता मत कर। तेरे दिमाग़ की तो क्या बात है।" ऐसा कहकर हँसते हुए मिहिर और पवन ने ताली बजाई। लेकिन, मानव के मन में हैरानी हुई, "इस प्रकार, किसी की अच्छाई का फायदा उठाना क्या योग्य है? इस बात का पता चलने के बाद भी क्या मुझे चूप रहना चाहिए?"

तो चलो, जानें कि दादाश्री इस बारे में क्या कहते हैं...

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

दादाश्री : कपट में सब मीठा लगता है, यहाँ-वहाँ भटकाता है।

प्रश्नकर्ता : इसमें कपट कहाँ से आया?

दादाश्री : क्रोध-माया-लोभ तो कम भटकाते हैं कपट ज्यादा भटकाता है। कपट यानी संसारी दशा भी नहीं, संसारी से भी हीन दशा। बिना कपट वाले लोग सरल होते हैं। कपट वाली प्रकृति महामुसीबत खड़ी कर देती है। कपट तो बेहोश बना देता है। खुद को भी पता नहीं चलता कि कैसा कपट कर रहे हैं। खुद को पता नहीं लगने देता कि, "मैं कपट कर रहा हूँ। क्रोध-मान-माया-लोभ करते वक्त तो ध्यान में रहता है।" लेकिन कपट तो बहुत गूढ़ है, करने वाले को भी पता नहीं चलता। कपट यानी खुद से सब गुप्त रखना, हर एक बात गुप्त रखना। सभी प्रकार के कपट। किसी का फायदा उठाने का कपट, किसी से कुछ छिपाना वह भी कपट।

प्रश्नकर्ता : कपट के स्वरूप को कैसे पहचानें?

दादाश्री : कपट का स्वरूप तो संसार में अपना फायदा उठाने के लिए दूसरों को अपने अभिप्राय अनुसार करवाना, दूसरों को अपने अभिप्राय में ले लेना, विश्वास में ले लेना। करने वाले को भी पता नहीं रहता कि मैं यह गलत कर रहा हूँ। ऐसा पता ही नहीं रहता।

युवा Camp

15 से 19 जून

स्थल:
बरोडा
त्रिमंदिर

कैम्प आकर्षण:

- अक्रम विज्ञान पर एडवान्स कोर्स
- दैनिक जीवन कौशल्य को तेज़ बनाना
- हॉबी कॉर्नर
- आउटिंग और खेल
- गरबा-भक्ति-आरती
- गिफ्ट और ग्रुप फोटो

नोट :

१) रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख ११ जून और २५० रुपए लेट फी ली जाएगी।

२) यह कैम्प सिर्फ रेग्युलर आने वाले युवा के लिए है। कैम्प में भाग लेने वाले युवा को अपने तरीके से आना है।

Registration:
youth.dadabhagwan.org

फी सिर्फ
1900/-

मेक-अप

कहाँ-कहाँ कर सकते हैं ?

खुद के लिए कल्पना

मैं कितना बड़ा या छोटा हूँ?

उदाहरण : एक सरल व्यक्ति...

खुद को रॉकस्टार,
व्यवसायिक, वगैरह
की कल्पना

वर्तन से मेक-अप

मम्मी के सामने नींद में होने का ढोंग करना।

वर्तन से मेक-अप

किसी से सच बात छूपाकर कहना।

वाणी से मेक-अप

राजनीतिज्ञ का अर्थहीन भाषण...

वर्तन से मेक-अप

मदद करने का ढ़ोंग करना लेकिन नुकसान पहुँचाने का भाव...

मेक-अप का परिणाम

एक बार पंद्रह सालों तक अनावृष्टि हुई (सुखा पड़ा)। अकाल पड़ने से असंख्य लोग मरने लगें। भूख से पीड़ित लोग, पशु, बच्चे और मुर्दों को भी खाने लगे। ऐसे समय में ब्राह्मणों ने सोचा कि गौतम मुनि महातपस्वी हैं, वे हमारी मदद करेंगे। ऐसा भी सुना है कि उनके आश्रम में सुकाल है। ऐसा सोचकर ब्राह्मण यज्ञकुंड, परिवार, गायों और दास-दासियों को लेकर गौतम मुनि के आश्रम पहुँचे। इन सभी ब्राह्मणों को आता देखकर गौतम मुनि ने उन्हें प्रणाम किया और उन्हें आश्रय दिया।

गौतम मुनि ने गायत्री देवी से प्रार्थना की। गायत्री देवी ने गौतम मुनि को प्रत्यक्ष दर्शन देकर, एक ऐसा पात्र दिया, जिसमें से अन्न, वस्त्र, घास, यज्ञ के लिए पदार्थ वगैरह ढेरों चीज़ें और गाय, भैंस वगैरह पशु निकले। सभी ब्राह्मणों को बुलाकर गौतम मुनि ने ये सारी चीज़ें बाँट दी। ब्राह्मण गौतम मुनि की बहुत प्रशंसा करने लगे। इस प्रकार गौतम मुनि ने बारह सालों तक ब्राह्मणों का पालन-पोषण किया।

आश्रम में उन्होंने गायत्री देवी की स्थापना की थी। वहाँ बैठकर ब्राह्मण पुरश्चरणों करते थे। गायत्री

देवी भी सुबह कन्या, दोपहर को युवती और संध्या समय वृद्धा के रूप में दर्शन देती थीं। स्वर्ग में एक बार इन्द्र ने मुनियों के पोषण से सम्बन्धित बातें करते हुए गौतम मुनि की सर्वोत्तम प्रशंसा की। यह सुनकर नारद, गौतम मुनि के आश्रम में उनके दर्शन करने आए और इन्द्र द्वारा की गई प्रशंसा कह सुनाई। फिर आश्रम देखकर, गायत्री देवी के दर्शन करके वहाँ से विदा हुए। आश्रम में रहने वाले ब्राह्मणों ने गौतम मुनि की कीर्ति सुनी। उन्हें द्वेष होने लगा और उन्होंने सोचा कि, जब सुकाल आएगा तब हम ऐसा करेंगे कि गौतम की कीर्ति बिल्कुल भी न रहें। थोड़े समय बाद बारिश आने से सभी देशों में सुकाल आ गया। उस समय ब्राह्मणों ने एक बुढ़ी और तुरंत ही मर जाए, ऐसी गाय बनाई। जब गौतम मुनि यज्ञ कर रहे थे, तब गाय को अग्निशाला में जाता देखकर गौतम मुनि ने, "हुं... हुं... "ऐसा कहकर गाय को रोका। वह गाय वहीं मर गई।

ब्राह्मणों ने शोर मचा दिया कि, गौतम ने गाय को मार दिया। गौतम मुनि यज्ञ कर रहे थे, आँखें बंद करके देखने से उन्हें ब्राह्मणों का सारा कपट पता चल गया। उन्हें बहुत गुस्सा आया और ब्राह्मणों को श्राप दे दिया। इस श्राप से ब्राह्मण अपनी विद्या भूल गए और विकट स्थिति में आ गए। वे गौतम मुनि की शरण में जाकर उनसे क्षमा माँगने लगे। गौतम मुनि ने उन्हें गायत्री देवी की भक्ति करने के लिए कहा। उन्होंने श्राप का अनुग्रह किया कि, कलियुग में आप लोग नर्क से निकलकर पुनर्जन्म लोगें।

एक बात तय है कि, कपट का परिणाम इस जन्म में नहीं, तो अगले जन्म में भुगतना ही पड़ता है। उससे बचना असंभव है।

Question

प्रश्नकर्ता : मेक-अप यानी क्या?

आप्तपुत्र : किसी के प्रति अंदर नेगेटिव हो रहा हो लेकिन उस नेगेटिव को छूपाकर मीठी-मीठी बातें करना। जैसा है वैसा तो बताता ही नहीं है, मेक-अप करता है। कई बार ऐसा होता है कि मम्मी ने हमें, कमरा साफ करने के लिए कहा हो, तो हम सारी चीज़ें उठाकर अलमारी में जैसे-तैसे रख देते हैं और कहते हैं कि कमरा साफ हो गया।

मेक-अप यानी क्या कि अपनी तरफदारी करना। वाणी को पॉलिश (चिकनी-चूपड़ी) करके बोलना। दूसरों के सामने इम्प्रेशन (प्रभाव) जमाने, झूठ को छिपाने, डर के मारे, अच्छा दिखाने के लिए मेक-अप करते हैं।

प्रश्नकर्ता : मन से, वाणी से और वर्तन से मेक-अप कैसे करते हैं? अर्थात् मन में कैसे मेक-अप कर सकते हैं?

आप्तपुत्र : मन से करते हैं न... मान लो कि हमें मन में विकारी विचार आते हों, अंदर से विषय के बारे में ही सोचते हैं और बाहर ऐसा दिखाते हैं कि, "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा।" इस तरह अच्छा दिखाते हैं। ऐसा करते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

आप्तपुत्र : ऐसे ही लोभ के लिए भी रहता है, मान के लिए भी रहता है। अंदर ऐसा रहता है कि यह ले लूँ, लेकिन यदि कोई देख नहीं रहा है, तो ले लेता है और यदि देख रहा है तो कहेगा, नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं करूँगा, और ऊपर से अपने पैसे देकर जाता है। इस तरह मान के लिए मेक-अप करता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि किसी व्यक्ति को दान देने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है, लेकिन अपना काम करवाने के लिए चेरमेन या नेताजी को, अच्छा दिखाने के लिए दान देता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें क्या नुकसान है? यानी यह तो समझ में आ गया कि गलत है, लेकिन नुकसान क्या है?

आप्तपुत्र : यानी यदि मेक-अप करते रहेंगे तो मूल में बात बनेगी नहीं। उदाहरण : गाड़ी यदि खराब हो गई है, तो कलर करके उसे बेच दें तो चलेगा?

नहीं, उसकी मरम्मत करवानी पड़ेगी। यानी जो बिगड़ गया है, उसे सुधारो। अर्थात् अंदर से सुधारो, बाहर का तो जैसा है वैसा होगा। मेक-अप करके अच्छा दिखाने से कोई हल नहीं आएगा।

Answer

प्रयोग

सामग्री - दो गिलास, सिक्का, पानी, पेन्सिल।

हेतु - जैसा है वैसा नहीं दिखाई देता।

रीत *- सर्व प्रथम दो खाली गिलास लें। एक गिलास में पेन्सिल और दूसरे गिलास में सिक्का डालो। फिर एक के बाद एक दोनों गिलास में पानी डालते जाओ और देखो क्या होता है?*

अवलोकन *- पेन्सिल वाले गिलास में एक ओर से देखने से ऐसा लगता है कि पेन्सिल टेढ़ी है। सिक्के वाले गिलास में पानी डालो, तब ऐसा आभास होता है कि सिक्का बड़ा है। यानी दोनों चीज़ें अपना असली स्वरूप खो देती हैं।*

निष्कर्ष : *गिलास में पानी डालने से जैसे पेन्सिल टेढ़ी लगती है, वैसे ही मेक-अप से चीज़ जैसी है वैसी नहीं दिखाई देती। इसी प्रकार हम खुद को भी मेक-अप करके दिखाते हैं और कई बार हम अपना ही असल स्वरूप क्या है, वह भूल जाते हैं।*

नाम : आयुष मेहता
उम्र : 18 वर्ष

Akram Pedia

हल्लो, फ्रेन्डस्, आज मेरे घर पर सब कज़िन्स इकट्ठे हुए थे। बहुत समय से मिले नहीं थे इसलिए बहुत बातें की। बचपन की बातें याद की, साथ में खाना खाया, खेल खेला और शाम को साथ में घूमने भी गए। सारा दिन मेरा ध्यान मेरी छोटी बहन नयना की ओर था। पता नहीं क्यों लेकिन आज मुझे उसका व्यवहार और वर्तन बहुत अजीब लग रहा था। रात को जब हम घर पहुँचे, तब मैंने नयना से पूछा, "तू क्या कर रही थी, आज? पिछले हफ्ते ही मम्मी ने मॉल से ब्रान्डेड मेक-अप बोक्स दिलाया था, तो भी मीरा दीदी की चीज़ों इस्तेमाल करने की क्या ज़रूरत थी? उनके चेहरे से साफ दिख रहा था कि उन्हें ज़रा भी अच्छा नहीं लगा।" नयना का जवाब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। अपना मेक-अप बोक्स ज्यादा इस्तेमाल न हो जाए इसलिए उसने मीरा दीदी का मेक-अप बोक्स इस्तेमाल किया। और उसके अनुसार, सब ऐसा ही करते हैं, उसमें कुछ गलत नहीं है। मैंने कहा, "ओ.के. ठीक है, लेकिन तुने अपनी चप्पल क्यों तोड़ दी? मैंने तुझे चप्पल तोड़ते हुए देखा था।" नयना ने कहा, "भाई, वह चप्पल वैसे भी पूरानी हो गई थी और दो दिन पहले ही कृपा दो जोड़ी फैन्सी चप्पल लाई है और वह ऐसे कुछ भी चीज़ दे ऐसी नहीं है इसलिए मैंने मेरी चप्पल तोड़ दी। यदि उसका घर दूर होता, तो शायद मेरा यह प्लान काम नहीं आता लेकिन उसका घर तो हमारी सोसाइटी में ही है इसलिए ऐसी परिस्थिति में चप्पल तो मुझे मिलनी ही थी। आप चिंता मत करो भाई, वैसे भी कृपा के पास बहुत सारे चप्पल हैं।"

हाँ, यह बात सही थी कि चाचा-चाची की इकलौती संतान होने के कारण वे कृपा का बहुत ध्यान रखते थे और उसकी हर एक इच्छा पूरी करते थे इसलिए उसके पास काफी चीज़ें हैं। लेकिन, मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि, अपनी बात मनवाने और दूसरों की चीज़ें इस्तेमाल करने के लिए नयना ऐसी ट्रिक कैसे कर सकती है? ऐसा सोचते हुए मैं अपने कमरे में गया। वैसे तो उसकी बात मुझे सही लग रही थी। क्योंकि, नयना से कोई चीज़ लेने के लिए या मम्मी से मेरी बात मनवाने के लिए मैं भी ऐसी ट्रिक करता ही हूँ। लेकिन, आज उसका ऐसा वर्तन देखकर गलत लग रहा था। मैंने हाथ में फोन लिया और फ्रेश होने के लिए यू-टयूब खोला। उसमें पूज्यश्री का नया वीडियो अपलोड हुआ था और उसमें मैंने सुना,

"मोह पूरा करने के लिए कपट करते हैं, उसके फलस्वरूप, मार पड़ेगा। गुनाह का दंड तो आएगा ही। क्योंकि, पराई चीज़ को हाथ लगाया, उसका फल तो भूगतना ही पड़ेगा। फिर, जब पता चले तब पश्चाताप करो। वह दोष धीरे-धीरे टूट जाएगा।"

यह सुनकर मैं समझ गया कि, सचमुच मेरा मोह पूरा करने के लिए ही ये सब कर रहा हूँ। जब कुछ भी प्राप्त करने के लिए कोई ट्रिक करता हूँ तब मुझे सामने वाले का नुकसान दिखाई नहीं देता। मैंने निश्चय किया कि अब मैं अपने फायदे के लिए किसी की भी चीज़ नहीं छिनूँगा और जो गलतियाँ मैंने की हैं, वे जैसे-जैसे याद आएँगी वैसे-वैसे पश्चाताप करके उनकी माफी माँग लूँगा।

अनुभव

"सोशियल नेटवर्किंग" शब्द सुनते ही ज्यादातर एवं अनुभवी लोगों को धोखा, कपट, समय की बरबादी जैसे विचार आते हैं। लेकिन, मुझे उसमें कम्यूनिकेशन, लोगों को जान सकें और अपडेटेड रह सकते हैं, ऐसे विचार आते थे। इस बारे में जब आप्तपुत्री बहन से चर्चा की, तब वे मेरा भाव समझ गई थीं और कहा था कि संभलकर चलना। अंत में तो वह कुसंग की ही सीढ़ी है। तुझे अगर अनुभव करना है, तो हर्ज नहीं है, लेकिन ध्यान रखना। उनकी यह बात मैंने हमेशा दिल में रखी थी। लेकिन मेरा दिल अभी भी उसमें लगा रहता था। मेरे फेसबुक के ९३७ दोस्त में से ५-७ अपरिचित लोग थे, जिनके साथ मैं बातें करती थी। उनमें से एक लड़का अनूज, जो मुझ से छोटा है और हमारे ही संप्रदाय का है, उससे ज्यादा बातें होती थीं। अनूज मुझे

मेरे छोटे भाई जैसा लगता था। मेरे कहने पर रक्षाबंधन वाले दिन वह मुझ से राखी बंधवाने भी आया था। मेरे मम्मी-पापा भी उससे मिले थे। अब हम वोटस्अप पर बातें करते थे। उसने अपने भाई-भाभी, बहन से भी वोटस्अप पर मेरी बात कराई थी। अब उन सभी के मेसेज भी आते थे। भाभी के साथ तो बहुत घुल मिल गई थी। मम्मी की तरह ही उनसे भी बातें करती थी। भाई-भाभी को मिलने की बहुत इच्छा होती थी लेकिन किसी न किसी कारणवश मिल नहीं पाती थी। एक दिन अनूज ने कहा कि बिज़नेस के लिए भाई-भाभी दूबई शिफ्ट हो गए हैं। अनूज की बहन से भी मिलने का सोचती थी लेकिन मिल नहीं पाती थी। लगभग डेढ़ साल तक मेसेज से बात-चीत के कारण मैं उनके बहुत करीब आ गई थी, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मैं अनुज के अलावा उसके परिवार के किसी भी व्यक्ति से नहीं मिली थी।

धीरे-धीरे मुझे कुछ अजीब सा लगने लगा कि जब भी भाई-भाभी या बहन से मिलने का तय करती तो मिल नहीं पाती थी। मुझे याद आया कि, मैंने एक दिन अनूज से पूछा था कि भाई सत्संग में आते हैं? सत्संग में आते हैं? तब उसने कहा था कि, "हाँ आज सुबह के सत्संग में आए थे।" जबकि उस दिन सुबह के सत्संग था ही नहीं। "ऐसी कई बातें मुझें याद आने लगी और मेरे मन में अनेक प्रश्न उठने लगे। मैंने अनूज से मिलने का सोचा।

दूसरे ही दिन अनूज से मिलकर मैंने अपनी पेरशानी का समाधान करने के लिए कहा। पहले तो वह टालता रहा, लेकिन मेरा गुस्सा देखकर उसने हकीकत बताई। उसकी बातें सुनकर मैं हैरान रह गई। उसने कहा कि उसके कोई भाई-भाभी या बहन हैं ही नहीं। वह खुद ही ये सारे किरदार बनकर मुझ से बात करता था। उस समय क्या कहूँ और क्या नहीं, मेरी समझ में नहीं आ रहा था। मेरे लिए भाभी मेरी मम्मी के समान थीं और हकीकत में वह थीं ही नहीं। मैं अपने आप को जिस परिवार का सदस्य मानने लगी थी, वह परिवार था ही नहीं।

तभी मुझे दीदी की बात याद आ गई। नीरू माँ के शब्दों का भी मैंने अनुभव किया कि, कुछ भी करने से पहले अच्छे और बूरे, दोनों परिणामों की तैयारी रखनी चाहिए। इसके अलावा अक्रम यूथ के "स्वप्न" नाम के अंक में दादाश्री ने कहा था कि "जीवन एक स्वप्न ही है।" तो यह कुछ भी सच है ही नहीं। इस प्रकार दादा का ज्ञान, नीरू माँ के शब्द, पूज्यश्री के आशीर्वाद इन सभी ने मुझे इस घटना के गलत असर से मुक्त रखा।

- Ymhtian , **सीमंधर सिटी**

वर्ड सर्च

1. दूसरों से आशा करना
2. सारी चीज़ें अपनी ही लगना
3. खुद की चीज़ पर अधिकार
4. अपने हक़ का नहीं है वह
5. दूसरों को नीचा दिखाना
6. जैसा है वैसा नहीं दिखाना
7. हम बुजुर्गों को ---------- रहना चाहिए।
8. --------- मूर्ति नीरूमाँ।
9. जलन
10. त्यौहार, प्रसंग
11. जिसका कोई जोड़ नहीं है वह
12. माँ-बाप की करनी चाहिए
13. जो विषय से खड़ा होता है
14. माफी
15. ------- वह संसार का नियम है
16. "मोहम्मद पयगंबर " में से दो अक्षर
17. दुरुपयोग का विरुद्ध --------
18. -------- की वाणी, जिसने जानी उसने जानी
19. खुद पर रखते हैं वह काबू

ळ	अ	पे	क्षा	ट	क	ग	से	प	श	का	द
प्र	ण	भ	प	थ	षा	ट	वा	ट	भे	ब	ड
र	ह	क	फा	म	य	सं	स	नि	ल	स	न
ह	क़	खा	ज्ञ	क्ष	फ	णुं	ल	र्भ	वा	म	ब
मो	त्र	वा	ऊ	मा	या	व	नी	य	प्यो	ज	ळा
छ	पे	ति	त्स	जी	न	ई	र्ष्या	वा	री	ण	ई
आ	शं	का	व	ल्य	र्त	ग	वि	गु	टी	थ	वा
धी	नो	ऋ	च	स्व	व	र्त	त	थ	रु	र	द
न	मा	प	अ	त्र	रि	ष्ण	रा	र	ज	क	थ
आ	इ	ज्ञ	जो	उ	प	यो	ग	वा	नि	श	ब्द
शं	ल्य	ह	ड	ष	त्स	र	स्व	शि	आ	वा	क
क	अ	नि	र	पे	क्ष	स	पु	ष्य	क	त्मा	रु
प	उ	ण	नि	अ	र्नि	प्र	ह	रु	थ	रु	थ
स	फा	अ	स	र्भ	प	दो	कृ	ज	षा	त	णा
कु	व्य	स	द्	उ	प	यो	ग	ति	ता	र्थ	प
कि	व	प्र	न्डे	द	ज	ता	न	चा	रि	त्र	वा
ब	हा	ति	ब	श	ता	ण	वे	द	नी	य	ब
ह	र	क्र	ई	मो	श	न	ल	ग	अ	मू	ल्य
उ	अ	म	स्प	र्धा	नि	ग्रं	थ	ब	ज	ग	त्
ऊ	भ	ण	ह	का	उ	न्ट	र	पु	ली	क	र्ता

उत्तर :
1) अपेक्षा
2) माया
3) हक़
4) अणहक्क
5) स्पर्धा
6) शंका
7) अधीन
8) वात्सल्य
9) ईर्ष्या
10) उत्सव
11) अजोड
12) सेवा
13) कषाय
14) क्षमा
15) परिवर्तन
16) मोह
17) सद्उपयोग
18) वीतराग
19) संयम

पज़ल

01

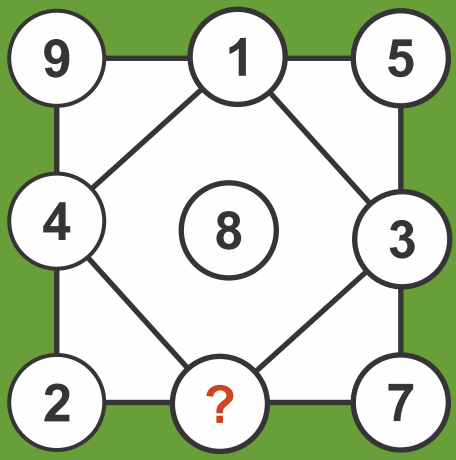

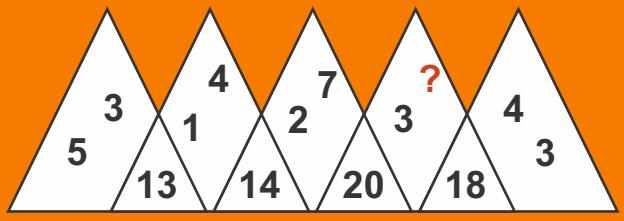

0	5	4	3	2	1	0
6	7	8	9	3	2	1

02

0	5	4	3	2	1	0
6	7	8	9	3	2	1

03

अब इसके बाद की संख्या कौन सी आएगी?

268,96,54,20,...?

उत्तर: 1) 8, 2) 6, 3) 0

पूज्यश्री के जन्मदिन का उत्सव मनाया गया

आप्तसंकुल की तरफ से शुभकामना कार्ड दिया गया

YMHT बहनों द्वारा स्वागत

LMHT बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

YMHT भाईओं ने गिफ्ट दिया

वर्ष : 6, अंक : 1
अखंड क्रमांक : 61
मई 2018

अक्रम यूथ

जगत् हमारा ही फोटो है।
तुम्हारे में कपट होगा
तब तक सामने वाला
तुम्हारे साथ कपट करेगा।
– दादाश्री

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।
मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग 14 से प्रकाशित की गई है।